सरकारी देखरेख में पलने वाले बच्चों के लिए अधिक अच्छी शिक्षा

संक्षेप

प्राक्कथन

यदि हम न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज के निर्माण के काम को गंभीरता से लेते हैं, तो हर बच्चे को अपनी योग्यताओं और संभावनाओं का पूर्ण विकास करने का अवसर मिलना चाहिए, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कैसी भी हो। यह बात सरकारी देखरेख में पलने वाले बच्चों पर भी लागू होती है।

इस लिए, सरकारी देखरेख में पलने वाले बच्चों को भी सरकार वही अवसर प्रदान करना चाहती है जो अवसर कोई भी माता पिता अपने बच्चों को देना चाहते हैं, और अच्छी शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण कोई अन्य चीज़ नहीं हैं जो उज्जवल भविष्य के लिए अत्यावश्यक है।

यह बहुत बड़ी चुनौती है। परिवार तथा मित्रों से अलग होना, अलग प्रकार के पड़ोस में जाना और स्कूल से बाहर समय बिताना किसी भी बच्चे के लिए कठिन होता है। ऐसे कठिन समय में पढ़ाई करना और भी मुश्किल हो जाता है। यही कारण है कि सरकारी देखरेख वाले बच्चों में से आधे बच्चों के पास देखरेख से बाहर जाते समय कोई शिक्षा योग्यताएं नहीं होती। इससे यह भी पता चलता है कि बीते समय में समाज ने इनके साथ कितना बड़ा अन्याय किया है।

हमने इस बुरी स्थिति को बदल डालने का दृढ़ निश्चय किया है। हमने पैसे ख़र्च करके सभी बच्चों को अधिक अच्छी शिक्षा प्रदान करने के काम का शिलान्यास तो कर दिया है। परंतु हमें और भी बहुत सा काम भी करना होगा। इसी लिए मैंने सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट से कहा कि वह विचार करे कि सरकारी देखरेख में पलने वाले बच्चों की शिक्षा का स्तर और ऊँचा करने के लिए सरकार क्या कर सकती है।

यह रिपोर्ट उन समस्याओं के बारे में अच्छी तरह से जाँच पड़ताल करने के बाद तैयार की गई है जो समस्याएं सरकारी देखरेख वाले बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए हमें हल करनी पड़ेंगी। जो परिवर्तन करने की ज़रूरत समझी गई है, उनके परिणाम स्वरूप बहुत बच्चों के रहने के स्थान बार बार बदले जाएंगे या वे बहुत कम समय स्कूल से बाहर बताएंगे। देखरेख वाले बच्चों को अधिक मदद और प्रोत्साहन दिया जाएगा, और पढ़ाई करने, स्कूल जाने और 16 वर्ष की उम्र के बाद भी पढ़ाई करने में उनकी मदद की जाएगी। पढ़ाई में पिछड़ गए बच्चों को अधिक मदद मिलेगी और हर बच्चे की सेहत और भलाई के लिए टीचरों, सोशल वर्करों और देखरेख करने वालों को अधिक अच्छा प्रशिक्षण दिया जाएगा।

ये सुधार सरकार की उस विस्तृत योजना का भाग हैं जिसका उद्देश्य बच्चों को आवश्क सेवाएं उस समय प्रदान करना है जब उन्हें इनकी ज़रूरत हो। आज हमने वे सेवाएं प्रदान करने की घोषणा की है जिनके बारे में बच्चों के ग्रीन पेपर *ऐवरी चाईल्ड मैटर्ज़ (हर बच्चा महत्वपूर्ण है – Every Child Matters)* में किया गया है। इसमें सेवाओं में तालमेल करने, काम करने वालों का अधिक स्पष्ट ज़िम्मेदारी और उत्तरदायित्व निश्चित करने और उन्हें अधिक शक्तिशाली बनाने के सुझाव पेश किए गए हैं। इससे बच्चों को अधिक सुरक्षा मिलेगी और पिछड़े हुए लोगों की आवाज़ सुनी जा सकेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस सब परिवर्तनों से सरकारी देखरेख में पलने वाले बच्चों को अपनी योग्यताओं का पूर्ण विकास करने का अवसर मिलेगा, जिसका उन्हें अधिकार है – यह केवल ऐसे बच्चों के लिए ही नहीं, अपितु हमारे पूरे समाज की सेहत और स्मृद्धि के लिए भी अत्यावश्क है।

टोनी ब्लेअर
Tony Blair

संक्षेप

हमारा लक्ष्य

1. सरकार की दीर्घकालीन नीति का लक्ष्य यह सुश्चित करना है कि सरकार की देखरेख में पलने वाला हर बच्चा अपनी योग्यता का पूरा विकास कर सके।

2. सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट (Social Exclusion Unit) की रिपोर्ट में उन अड़चनों के बारे में जाँच पड़ताल की गई है जो सकरारी देखरेख में पलने वाले बच्चों को अपनी योग्यताओं का पूरा विकास करने से रोकती हैं, और इनके जीवन के अवसरों को बढ़िया बनाने के लिए किए जाने वाले विशेष कामों पर ज़ोर दिया गया है।

महत्वपूर्ण परिवर्तन – सरकारी देखरेख वाले बच्चों की शिक्षा के बारे में सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट की रिपोर्ट

- **अधिक स्थिरता** ताकि सरकारी देखरेख वाले बच्चों को बहुत अधिक बार स्कूल न बदलना पड़े।
- **स्कूल से बाहर कम समय – पढ़ाई में अधिक समय** – स्कूल में दाख़िल होने में मदद, पढ़ाई के अधिक अच्छे अवसर, और सरकारी देखरेख वाले बच्चों को नियिमत रूप से स्कूल जाने की 16 वर्ष की उम्र के बाद भी पढ़ाई चालू रखने में अधिक मदद देना
- **स्कूल के काम में मदद** – बच्चों को अधिक निजी मदद, और इस काम में मदद देने के लिए टीचरों और सोशल वर्करों को प्रशिक्षण देना।
- **स्कूल के काम में घर से अधिक मदद मिलना** – देखरेख करने वालों को बच्चों की ज़रूरतों के बारे में अच्छा प्रशिक्षण देना।
- **अधिक अच्छी सेहत और भलाई** – टीचर, सोशल केअर स्टाफ़, हेल्थ वर्कर और देखरेख करने वाले सभी मिल कर बच्चों की भलाई के लिए काम करेंगे।

3. सभी बच्चों को जीवन में अधिक अच्छे अवसर देने के लिए बड़े परिवर्तनों के बार में सुझाव बच्चों के ग्रीन पेपर *ऐवरी चाईल्ड मैटर्ज़ (हर बच्चा महत्वपूर्ण है – Every Child Matters)* में पेश किए गए हैं।

बच्चों के ग्रीन पेपर के सुझाव

किए जाने वाले कामों में चार मुख्य क्षेत्रों की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा –

- **परिवारों और देखरेख करने वालों की मदद करना**
- **शीघ्र हस्ताक्षेप करना – समस्याओं की शीघ्र पहचान करके प्रभावशाली ढंग से बच्चे की रक्षा करना**
- **उत्तरदायित्व और अच्छा बनाना और तालमेल बढ़ाना**
- **काम को संभालने वाले कर्मचारियों की योग्यता बढ़ाना**

4. सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट ने सरकारी देखरेख वाले बच्चों की पढ़ाई वर्तमान लक्ष्यों के बारे में पुनर्विचार करने के बाद नया लक्ष्य निर्धारित किया है। इस काम में मदद देने के लिए अधिक पैसे भी हैं।

नया लक्ष्य

नये पब्लिक सर्विस ऐग्रीमेंट का उद्देश्य –

बच्चों को जीवन में अधिक अच्छे अवसर देना, और इस काम के लिए –

- **वर्ष 2006 तक सरकारी देखरेख़ वाले बच्चों की पढ़ाई और पढ़ाई में सफलता और उन जैसे अन्य बच्चों की पढ़ाई और पढ़ाई में सफलता के बीच के अंतर को काफ़ी कम करना।**

2006 तक इस लक्ष्य को तब प्राप्त किया जा सकता है, यदि –

- 11–वर्ष के बच्चों की अंग्रेज़ी और गणित में सफलता अन्य बच्चों की सफलता के काम से कम 60% के बराबर हो;
- पढ़ाई छोड़ जाने वालों की संख्या को कम किया जाए, ताकि स्कूल छोड़ने की उम्र में जी.सी.ऐस.ई या इसके बराबर की परीक्षा पास किए बिना जाने वालों की संख्या 10 प्रतिशत से अधिक न हो; और
- 2002 के बाद 16 वर्ष की उम्र तक जी.सी.ऐस.ई में ए*–सी ग्रेड प्राप्त करने वालों की संख्या में हर वर्ष 4 प्रतिशत बढ़ी हो; और सभी अथारिटियों में सरकारी देखरेख वाले युवा लोगों ने इस स्तर की योग्यता प्राप्त की हो।

अधिक पैसे ख़र्च करना

सरकार ने स्पैंडिंग रिवियू 2002 में इस काम के लिए अधिक पैसे ख़र्च करने की घोषणा की है –

- 2003-06 के समय में वल्नीरेबल चिल्ड्रन्ज़ ग्रॉंट (Vulnerable Children's Grant) द्वारा £252 मिलियन ख़र्च करके सबसे अधिक ज़रूरतमंद बच्चों की पढ़ाई में मदद की जाएगी, जिनमें सरकारी देखरेख वाले बच्चे भी शामिल हैं।
- 2003-06 के समय में £113 मिलियन च्वाइस प्रोटेक्ट्स प्रोग्राम (Choice Protects programme) द्वारा बच्चों के देखरेख में ले जाने और रखने के काम में सुधार करने के लिए ख़र्च किए जाएंगे।

सरकार के काम में प्रगति

5. सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट की रिपोर्ट में निर्धारित किए कामों के साथ साथ, सरकार ने देखरेख बाले बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए किए जाने वाले सुधारों पर पिछले दिनों और भी पैसे ख़र्च लिए हैं। इनमें निम्नलिखित काम शामिल हैं –

- बच्चों को सेवाएं प्रदान करने के लिए *Quality Protects (क्वालिटी प्रेटेक्ट्स)* नाम वाली राष्ट्रीय स्तर के उद्देश्यों वाली नई पाँच–वर्षीय योजना 1998 में शुरू की गई, और इसके लिए £885 मिलियन और पैसे रखे गए;
- साँझी *Guidance on the Education of Children and Young People in Public Care (सरकारी देखरेख वाले बच्चों और युवा लोगों की शिक्षा के बारे में हिदाइतें)* (या 'ज्वाइंट गाईडेंस') डिपार्टमेंट ऑफ़ हेल्थ (डी.ऐच) और डिपार्टमेंट फ़ॉर ऐजूकेशन ऐंड स्किल्ज़ (डी.ऐफ़.ई.ऐस) के सहयोग से वर्ष 2002 में तैयार की गई;
- देखरेख वाले बच्चों को रखने वाले होमों और पालन करने की सेवाओं के लिए नेश्नल मिनीमम स्टैंडर्डज़ (न्यूनतम् राष्ट्रीय स्तर) 2002 में प्रकाशित किए गए; और
- सरकारी देखरेख से जाने वाले बच्चों की मदद करने के लिए लोकल अथारिटियों की ज़िम्मेदारियाँ अक्टूबर 2001 में शुरू की गईं।

6. इससे बच्चों की देखरेख के काम में काफ़ी सुधार हुए हैं जैसे कि बच्चों के शिक्षा आवश्यकताओं के लिए सीधे तौर पर काम करने वालों को अधिक अच्छा प्रशिक्षण देना। परंतु प्रगति कहीं अधिक और कहीं कम हुई है। हर चार लोकल अथारिटियों में से एक से भी कम ने 2001 तक देखरेख से जाने वाले आधे बच्चों को एक या अधिक जी.सी.ऐस.ई की योग्यताएं दिलवाने का लक्ष्य पूरा किया था।

7. **सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट को यह पता लगाने के लिए कहा गया था कि सरकारी देखरेख वाले बच्चों को जीवन में अधिक अच्छे अवसर देने के लिए और क्या किया जा सकता है, और इसके लिए यूनिट को समस्याओं छानबीन करने, सरकारी देखरेख वाले बच्चों और उनके स्याफ़ से बातचीत करने, और सरकार के विभिन्न विभागों के लिए साँझी योजनाएं पेश करने के लिए कहा गया।**

पृष्ठभूमि – वर्तमान स्थिति

8. बहुत से बच्चे स्कूल जाना पसंद करते हैं, और लगभग सभी स्कूल जाने के महत्व को समझते है। परंतु उनका शिक्षा का अनुभव कुल मिलाकर बुरा ही है, और शिक्षा में सफलता भी बहुत कम है।

सरकारी देखरेख में बच्चे – मुख्य आंकड़े

- किसी एक समय पर, लगभग 60,000 बच्चे सरकारी देखरेख में होते हैं। वर्ष 2001-02 में सरकारी देखरेख वाले बच्चों में से 41% की उम्र 10 वर्ष या कम थी।
- अधिकतर बच्चे – 80 प्रतिक्षत – उनके साथ होने वाले बुरे व्यवहार या लापरवाही, या पारिवारिक कारणों से, सरकारी देखरेख में भेजे जाते हैं। 10 प्रतिशत से भी कम उनके अपने बुरे व्यवहार के कारण यहाँ आते हैं।
- दो तिहाई पालन करने वाले किसी परिवार के पास रहते है; और 10 में से एक बच्चा चिल्ड्रन्ज़ होम में रहता है।
- चार बच्चों में एक अपने 'घर' की लोकल अथारिटी से बाहर रहता है।
- वर्ष 2001 में सरकारी देखरेख वाले केवल 8 प्रतिशत बच्चों ने जी.सी.ऐस.ई परीक्षा में पाँच या अधिक ए*–सी ग्रेड प्राप्त किए, परंतु सभी युवा लोगों में से आधे लोगों ने ये ग्रेड प्राप्त किए।
- देखरेख वाले बच्चों के 7, 11 और 14 वर्ष की उम्र के की-स्टेज टैस्टों के परिणाम अधिक बुरे होते हैं, और इनमें से केवल 1 यूनिवर्सिटी जाता है।

9. सरकारी देखरेख में से जाने वाले कुछ लोग बाद में बहुत सफल होते हैं। परंतु कुछ के लिए पढ़ाई और देखरेख **बाद में उनकी सामाजिक अलगथलगता** का कारण बनती है।

- **गलियों में सोने वालों** में से लगभग एक चौथाई सरकारी देखरेख में रहे होते हैं;
- सरकारी देखरेख में रहे युवा लोगों की उन्नीस वर्ष की आयु तक माता पिता बन जाने की संभवाना अढ़ाई गुना अधिक होती है; और
- **जेल** जाने वाले व्यस्क लोगों में से एक चौथाई बचपन में किसी समय सरकारी देखरेख में रहे होते हैं।

10. लोगों को होने वाले निजी घाटे के साथ साथ **समाज को भी काफ़ी आर्थिक घाटा** होता है। अनुमान है कि सरकारी देखरेख वाले बच्चों की पढ़ाई, रोज़गार और प्रशिक्षण के स्तर को ऊँचा करके अन्य बच्चों के स्तर तक ले जाने से तीन वर्षों में **£300 मिलियन** की बचत हो सकती है। अपराध कम होने से और लोगों के बेघर न होने से और अधिक पैसे बचेंगे।

मूल समस्याएं

11. पाँच समस्याएं प्रगति और परिवर्तरन के मार्ग की मूल अड़चनें हैं –

- **योग्यता** – बच्चों के सोशल केअर कर्मचारियों की बहुत सी नौकरियाँ ख़ाली पड़ी हैं, सरकारी देखरेख वाले बच्चों की शिक्षा आवश्यकताओं के बारे में स्टाफ़ को काफ़ी प्रशिक्षण नहीं मिला;
- **प्रबंध और नेतृत्व** – इस स्तर पर वचन–बद्धता और समय की कमी, स्टाफ़ को लगता है कि वे कोई परिवर्तन नहीं ला सकते, और काम करने वाले स्टाफ़ और उनके मैनेजरों के बीच में आपसी सूझबूझ और तालमेल की कमी;
- **साधन** –यद्यपि असल में काफ़ी पैसे ख़र्च किए जा रहे हैं, परंतु कई स्थानों पर सेवाएं प्रदान करने में अब भी बहुत कठिनाई पेश आ रही है, योजनाबद्ध कार्यनीति की कमी और साधनों के दुरुपयोग के कारण स्थिति और भी ख़राब हो जाती है।
- **व्यवस्था और ढाँचे** – बहुत अधिक स्थानों पर काम करने वाले कर्मचारियों और लोकल अथारिटी के विभिन्न विभागों के अफ़सरों के बीच में तालमेल की कमी है; और
- **दृष्टिकोण** – बहुत से देखरेख करने वाले और सोशल वर्कर बच्चों की देखरेख के बारे में बहुत अच्छे विचार रखते हैं, परंतु बहुत से कर्मचारियों और समाज में इसके बारे में बहुत ही नकारात्मक विचार हैं।

पाँच बड़े मुद्दे

12. सरकारी देखरेख वाले बच्चों की पढ़ाई में कम सफलता के पाँच बड़े कारण सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट ने ढूँढ निकाले हैं –

(i) बहुत से बच्चों के जीवन में बहुत **अस्थिरता** होती है;

(ii) सरकारी देखरेख वाले बच्चे बहुत समय **स्कूल या शिक्षा स्थान से बाहर बिताते** हैं;

(iii) यदि ये बच्चे पढ़ाई में पिछड़ जाए, तो उन्हें **पढ़ाई में काफ़ी मदद** नहीं मिलती;

(iv) देखरेख करने वालों से उम्मीद नहीं की जाती, और उनमें यह योग्यता भी नहीं होती, कि वे पढ़ाई में आगे बढ़ने के लिए बच्चों को घर में **मदद और प्रोत्साहन** दे सकें;

(v) सरकारी देखरेख वाले बच्चों की **भावुक, मानसिक और शारीरिक भलाई** के लिए उन्हें अधिक मदद की ज़रूरत है।

स्थिरता

13. सरकारी देखरेख वाले अधिकतर बच्चे एक ही बार देखरेख में आते हैं और एक ही स्थान पर रहते हैं। परंतु 2001-02 में **सात में से एक को तीन या चार स्थानों पर भेजा गया। सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट ने जिन बच्चों से बात की उनमें से एक तिहाई से अधिक का स्कूल** उन्हें रखने वाले स्थान को बदलने के कारण **कम से कम दो बार बदला गया था।**

14. स्थिरता लाने के लिए सबसे बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि देखरेख के लिए सही स्थान ढूँढ कर उसे क़ायम रखा जाए। स्थान के ग़लत चुनाव और कार्यनीति की ग़लत योजनाबंदी को बुरे ढंग से लागू करने के कारण सोशल वर्करों के काम में बाधा आ सकती है।

स्कूल से बाहर और पढ़ाई में बिताया जाने वाला समय

15. प्रारंभिक वर्षों में मिलने वाली पढ़ाई की सुविधाओं के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है। बहुत सी लोकल अथारिटियों को यह मालूम ही नहीं कि उनकी देखरेख में पलने वाले कितने तीन या चार वर्ष की उम्र के बच्चे नर्सरी में जाते हैं।

16. सरकारी देखरेख वाले बहुत से स्कूल जाने की उम्र के बच्चों की पढ़ाई आम स्कूलों में होती है, परंतु थोड़े से, परंतु महत्वपूर्ण गिनती में, बच्चों की पढ़ाई अलग प्रकार के स्थानों पर भी होती है, और कई बच्चों की पढ़ाई हफ़्ते में कुछ घंटे ही होती है। कुछ बच्चे निम्नलिखित कारणों से काफ़ी समय स्कूल नहीं जा सकते –

- **उन्हें दाख़िल करने वाला स्कूल नहीं मिलता;**
- **उन्हें स्कूल से निकाल दिया जाता है;** या
- **वे नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते।**

17. 2001-02 में देखरेख से जाने वाले केवल 46 प्रतिक्षत युवा लोगों के बारे में ही जानकारी मिली कि वे 19 वर्ष की उम्र में काम या पढ़ाई करते थे, परंतु आम ढंग से पलने वाले बच्चों में से 86 प्रतिशत 19 वर्ष की उम्र में काम या पढ़ाई करते थे।

स्कूल के काम में मदद

18. सरकारी देखरेख वाले बच्चों को **पढ़ाई में अधिक मदद** की ज़रूरत हो सकती है, क्योंकि वे स्कूल नहीं गए होंगे या उनकी विशेष शिक्षा आवश्कताएं तो सकती हैं। **जो बच्चे सरकारी देखरेख में एक वर्ष या अधिक समय रहे, उनमें से 27 प्रतिक्षत की विशेष शिक्षा आवश्कताओं की स्टेटमेंट (ऐस.ई.ऐन) बनी है,** जबकि आम बच्चों में से केवल 3 प्रतिशत की ही यह स्टेटमेंट बनती है।

19. सरकारी देखरेख वाले बच्चों को पूरे स्कूल से मिलने वाली मदद से लाभ होता है, जैसे पढ़ाई के मैंटरों (मार्गदर्शकों) और धौंसबाज़ी और स्कूल से भाग जाना रोकने के लिए किए जाने वाले काम। इसके साथ साथ, यदि हर स्कूल में हर बच्चे की पढ़ाई की निजी योजनाओं में मर्गदर्शन और विशेष टीचरों को शामिल कर लिया जाए, तो और भी अच्छी बात होगी। ऐसे काम की सफलता के बारे में मिली प्रारंभिक जानकारी मिश्रित सी है।

20. सरकारी देखरेख वाले और देखरेख से बाहर जाकर फ़र्दर और हायर (आगे वाली और उच्चतर) स्तर की पढ़ाई करने वाले युवा लोगों को अतिरिक्त सहायता की ज़रूरत हो सकती है, ख़ास तौर पर तब जब वे स्कूल छोड़ने बाद फिर से पढ़ाई करने लगें।

घर से मिलने वाली मदद और प्रोत्साहन

21. देखभाल करने वाले जो लोग और जो सोशल वर्कर सफलता पूर्वक पढ़ाई में मदद करते हैं, उनकी उम्मीदें ऊँची होती है, और उन्हें अपने कामों और ज़िम्मेदारियों के बारे में स्पष्ट समझ होती है, और बच्चे के विकास और पढ़ाई में मदद देने के लिए उनके पास ताज़ा जानकारी और योग्यताएं होती हैं।

22. एक ही लोकल अथारिटी में भी बच्चों को पढ़ाई में दी जाने वाली मदद में **बहुत विभिन्नताएं** होती हैं। यद्यपि देखरेख करने वाले कई लोग बहुत अच्छी मदद प्रदान करते हैं, परंतु कई लोग मदद नहीं देते, क्योंकि बच्चे की मदद करने के ढंगों के बारे में और अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में स्वंय उन्हें पता नहीं होता।

23. **यूथ वर्क और स्कूल से बाहर किए जाने वाले कामों** द्वारा बच्चों की पढ़ाई और विकास में काफ़ी योगदान दिया जा सकता है। सरकारी देखरेख वाले बच्चों में से लगभग तीन चौथाई को स्कूल के बाद होने वाले कामों और क्लबों में शामिल किया जा सकता है।

सेहत और भलाई

24. पढ़ाई के परिणामों और बच्चों की **भावुक, मानसिक और शारीरिक सेहत** का बहुत प्रभाव पड़ता है। स्कूल बच्चे के आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान में वृद्धि करके, उन्हें खेलों में शामिल करके और सेहत के बारे में जानकारी देकर, बच्चे की सेहत में बहुत सुधार कर सकता है।

25. बच्चे को रखने वाले स्थान को बदलने से समस्याएं और भी गंभीर हो सकती है। अस्थिरता, धौंसबाज़ी, और मानसिक ठेस, ये सब बच्चे की सेहत पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

26. मानसिक सेहत की समस्याओं वाले बच्चों और युवा लोगों को मिलने वाली मानसिक सेहत सेवाओं (Child and Adolescent Mental Health Serviecs - CAMHS) से लाभ उठाने में मुश्किलें आ सकती हैं। कुछ इलाकों में इसके लिए 12-18 महीनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। सरकार का लक्ष्य है कि इन सेवाओं में हर वर्ष10 प्रतिशत वृद्धि की जाए, और इस काम के लिए अगले तीन वर्षों में £250 मिलियन ख़र्च किए जाएंगे।

सरकारी देखरेख वाले बच्चों के लिए काम करना – राष्ट्रीय स्तर पर किए जाने वाले सरकारी काम

27. सरकार क्वालिटी प्रोटेक्ट्स द्वारा किए जाने वाले कामों को आठ क्षेत्रों में और आगे बढ़ाने के लिए काम करेगी। बड़ी रिपोर्ट नवें चैप्टर में दी गई पूरी लिस्ट में ये काम शामिल हैं –

(i) **बच्चों के ग्रीन पेपर द्वारा कानून बनाने के बारे सलाह मशवरा करके निम्नलिखित कामों के लिए उत्तरदायित्व में वृद्धि करना** –

- डाइरेक्टर ऑफ़ चिल्ड्रन्ज़ सर्विस का नया पद स्थापित करना
- बच्चों के बारे में किए जाने वाले कामों का नेतृत्व करने का काम हर कौंसिल में किसी विशेष व्यक्ति को संभालना; और
- सरकारी देखरेख वाले बच्चों की पढ़ाई में सफलताओं को बढ़ाना लोकल अथारिटियों का कर्त्तव्य बनाना

(ii) **सीधे तौर पर बच्चों के लिए काम करने वालों को अधिक प्रभावपूर्ण मदद देना**

- सोशल वर्करों और देखरेख वाले बच्चों के साथ काम करने वाले अन्य लोगों की ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट करना; और
- बच्चों का पालन करने वालों को अधिक अच्छा प्रशिक्षण और मदद देकर बच्चे को वहाँ रखने में आ सकने वाली अड़चनों को रोकना, ताकि पालन करने वाले घर में बच्चे की अधिक मदद कर सकें।

(iii) **यह सुनिश्चत करना कि लोकल अथारिटियों के पास पर्याप्त साधन हों** –

- वलनिरेबल चिल्ड्रन्ज़ ग्राँट (तीन वर्षों में £252 मिलियन) और च्वाइस प्रोटेक्ट्स फ़ंडिंग (तीन वर्षों में £113 मिलियन द्वारा)1 अप्रेल 2004 से, क्वालिटी ग्राँट लोकल अथारिटियों के आम बजटों में शामिल की जाएगी।

(iv) **देखरेख, और सरकारी देखरेख में रहने वालों के बारे में सूझ बूझ अच्छी बनाना**

- लोकल अथारिटियों तथा अन्य लोगों से मिलकर विचार करना कि ऐसी देखरेख के बारे में लोगों में सही सूझ बूझ कैसे पैदा की जाए, और धौंसबाज़ी और इसके साथ जुड़ी बदनामी को कैसे दूर किया जाए।

(v) **लम्बे समय के लिए कानूनी ढाँचे और मार्गदर्शन में सुधार करके बच्चों को देखरेख में रखने की योजनाबंदी को बेहतर बनाने के लिए सरकार निम्नलिखित योजनाओं के बारे में सलाह मशवरा करेगी –**

- बच्चे को रखने वाला स्थान बदलने के कारण स्कूल बदलना कम करना;
- बच्चे को अधिक दूर रखना कम करना;
- विशेष सेवाएं इलाके में प्राप्त करने के काम को अधिक अच्छा बनाना।

(vi) **स्तर अधिक अच्छे बनाना**

- जनरल सोशल केअर कौंसिल (जी.ऐस.सी.सी) को सिफ़ारिश करना कि परिवारों के साथ काम करने वाले सोशल केअर स्टाफ़ को जी.ऐस.सी.सी के रजिस्टर पर रखने की शर्त यह हो कि इनके पास बच्चों की पढ़ाई और विकास के बारे में ताज़ा जानकारी हो।

(vii) **अब और भविष्य में नीति बनाते समय सरकारी देखरेख वाले बच्चों को प्राथमिकता देना –**

- स्कूल जाने से पहले की उम्र के बच्चों के बारे में राष्ट्रीय प्रोग्रामों में सरकारी देखरेख वाले बच्चों और उनकी देखरेख करने वालों की ज़रूरतों को मान्यता देना; और
- बच्चों की भावुक और मानसिक सेहत में सुधार करना।

(viii) **जानकारी और खोज पड़ताल का अधिक अच्छे ढंग से उपयोग करना**

- स्कूल सैंसस से मिलने वाली जानकारी (ख़ास तौर पर नस्ली अल्पसंख्यक बच्चों के बारे में जानकारी) का उपयोग करना; और
- लम्बे समय में केंद्रीय सरकार के आँकड़ों की आवश्कताओं को इसके अनुसार बनाना।

सरकारी देखरेख वाले बच्चों के लिए काम करना – राष्ट्रीय स्तर पर किए जाने वाले सरकारी कामों के बारे में सिफ़ारिशें

28. छः क्षेत्रों में हुए काम को आगे बढ़ाने के लिए लोकल अथारिटियों, स्कूलों और देखरेख करने वाले स्वतंत्र लोगों को कुछ करना चाहिए। बड़ी रिपोर्ट के चैप्टर दस में दी गई लिस्ट में ये काम शामिल हैं –

(i) **अधिक अच्छी योजनाबंदी –**

- कार्यनीति के स्तर पर प्रबंध के बारे में अधिक अच्छी जानकारी के उपयोग द्वारा भविष्य में बच्चों को देखरेख में रखने की ज़रूरतों के बारे में पता लगाना चाहिए, ताकि उन्हें रखने के स्थान को बदलने की ज़रूरत न पड़े; और
- हर बच्चे की पढ़ाई के निजी लक्ष्य निश्चित किए जाने चाहिएं।

(ii) **सरकारी देखरेख वाले बच्चों को प्राथमिकता देना**

- लोकल अथारिटियों को सुनिश्चत करना चाहिए कि वे इन बच्चों की देखरेख के लिए स्कूल जाने की उम्र से कम उम्र वाले बच्चों को मिलने वाली स्थानीय सुविधाओं का उपयोग कर सकें; और
- लोकल अथारिटियों को चाहिए कि वे उपलब्ध पैसों से सरकारी देखरेख में रखे बच्चों का स्कूल में दाख़िला आसान बनाने के लिए बर्सरियों की व्यवस्था करने के बारे में विचार करें।

(iii) **सरकारी देखरेख वाले बच्चों को अधिक मदद देना**

- लोकल अथारिटियों को यह सुनिश्चत करना चाहिए कि हर बच्चे की स्कूल से बाहर बढ़िया कामों तक पहुँच हो और सही प्रकार की शिक्षा पुस्तकें, खिलौनों, जानकारी और इन्फ़र्मेशन टेक्नॉलोजी का सामान उन्हें मिल सकें;
- जिन बच्चों को स्कूल में दाख़िला नहीं मिलता, उनकी फ़ुल–टाईम पढ़ाई की व्यवस्था लोकल अथारिटियों को तुरंत करनी चाहिए;
- देखरेख से बाहर जाने वालों को सेवाएं प्रदान करने वालों को कालेजों और यूनिवर्सिटियों के साथ इन लोगों की ज़रूरतों के बारे में अच्छी जानकारी देनी चाहिए, ताकि वहाँ के स्टाफ़ को इसके बारे में अच्छा प्रशिक्षण दिया जा सके।

(iv) **सरकारी देखरेख वाले बच्चों की बात सुन कर उस पर अमल करना**

- सोशल वर्करों को चाहिए कि जिन बच्चों को स्कूल से निकाला गया है उनकी मदद के लिए वे ऐड्वाईज़री सेंटर फ़ॉर ऐजूकेशन ऐक्सक्लूयन हेल्पलाईन से सलाह मशवरा करें, और बच्चे और उसकी देखरेख करने वालों के दृष्टिकोण के बारे में भी विचार करें, और ज़रूरत होने पर सही प्रकार की चुनौती दें; और
- बच्चों और युवा लोगों को मिलने वाली शिक्षा के बारे में उनके विचार भी पूछे जाने चाहिएं और इन पर अमल भी किया जाना चाहिए।

(v) **सोशल वर्करों और टीचरों को प्रशिक्षण देना**

- लोकल अथारिटियों को चाहिए कि वे स्टाफ़ के लिए साँझे प्रशिक्षण की व्यवस्था करें जिसमें सरकारी देखरेख वाले बच्चे और युवा लोग और देखरेख से बाहर जाने वाले भी प्रशिक्षण के काम में भाग लें।
- देखरेख करने वालों की योग्यताओं का प्रारंभिक हिसाब लगाते समय, लोकल अथारिटियों को चाहिए कि बच्चों की पढ़ाई में मदद करने की इन लोगों की योग्यता की ओर वे ध्यान दें और जिनकी योग्यता पर्याप्त स्तर की न हो, उन्हें वे अधिक मदद दें।

(vi) **उपलब्ध जानकारी का उपयोग सेवा में सुधार के लिए करना**

- लोकल अथारिटियों को चाहिए कि वे बच्चों के सराकारी देखरेख में आते समय और देखभाल से जाते समय, या देखरेख का स्थान बदलने के कारण स्कूल बदलने वाले बच्चों की गिनती का लेखाजोखा करें।
- लोकल अथारिटियों को यह जानकारी इकट्ठी करनी चाहिए कि बच्चों की निजी ज़रूरतों को पूरा करने के लक्ष्य किस हद तक पूरे होते हैं।

स्थानीय स्तर पर किए जाने कामों में मदद देने के लिए सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट ने अच्छे कामों की गाईड तैयार की है, जिसमें इन समस्याओं को हल करने के केसों की उदाहरणें पेश की गई हैं। यह गाईड इस वेबसाईट पर पढ़ी जा सकती है – www.socialexclusionunit.gov.uk , या इसे मंगवाने के लिए इस नम्बर 020 7944 8133 पर फ़ोन करें।

सफलता को नापना – हमें कैसे पता चलेगा कि कम सही हो रहा है?

29. पब्लिक सर्विस ऐग्रीमेंट के लक्ष्य पूरे करने के साथ साथ, सरकार यह भी सुनिश्चत करने के प्रबंध भी करेगी कि रिपोर्ट में बताए काम पूरी तरह से लागू किए जाएं।

प्रगति का लेखाजोखा करने और इसे चैक करने के लिए ये काम किए जाएंगे –

- मुख्य इन्सपेक्टरों की मदद से यह यकीनी बनाना कि इस रिपोर्ट में बताए कामों को लागू करने को ओर किसी भी सम्बंधित संस्था की कारगुज़ारी की सफलता का मूल्यांकन करते समय ध्यान दिया जाए;
- सरकारी देखरेख वाले बच्चों की पढ़ाई में होने वाली प्रगति को नापते समय परिणामों के वर्तमान सूचकों का उपयोग करके और इन्सपेक्टरों के सहयोग से की–स्टेज टैस्टों, प्रारंभिक योग्यताओं और 16 वर्ष की उम्र के बाद कालेज या यूनिवर्सिटी जाने में सफलता के नये सूचक तैयार किए जाएंगे;
- 2004 स्पैंडिंग रिवियू के समय यह विचार भी किया जाएगा कि क्या अधिक लक्ष्य और सूचक भी शामिल किए जाएं, जिनमें अलग अलग बच्चों की निजी प्रगति को नापने के लिए 'वैल्यू–ऐडड' लक्ष्य भी शामिल हों?
- रिपोर्ट को लागू करने के काम को आगे बढ़ाने के लिए नया प्राजेक्ट ग्रुप बनाना। इस ग्रुप का निरीक्षण मिनिस्टीरियल कमेटी ऑन सोशल ऐक्सक्लूयन और मिनिस्टीरियल सब–कमेटी ऑन द डिलिवरी ऑफ़ सोशल जस्टिस फ़ॉर चिल्ड्रन, यंग पीपल ऐंड फ़ैमिलीज़, और सरकारी देखरेख वाले बच्चों की पढ़ाई के बारे में सलाह देने वाला एक बाहर वाला ग्रुप करेगा।

अधिक जानकारी

यह जानकारी इन भाषाओं में भी निम्नलिखित पते से मिल सकती है – बंगली, गुजराती, कैंटोनीज़, हिंदी, उर्दू और पंजाबी। इस संक्षेप दस्तावेज़ की कापियाँ ऐस.ई.यू की इस वेबसाईट से भी उतारी जा सकती है – www.socialexclusionunit.gov.uk

निम्नलिखित पते से आप यह पर्चा ब्रेल में और ऑडियो टेप पर भी ले सकते हैं –

पूरी रिपोर्ट की कापी या इस पर्चे कौ और कापियाँ वेबसाईट से या निम्नलिखित पते से मिल सकती हैं –

संपर्क
Social Exclusion Unit
Office of the Deputy Prime Minister
7/G10 Floor
Eland House
Bressenden Place
London SW1E 5DU
टेलीफ़ोन – 020 7944 8133
ईमेल – seupublications@odpm.gsi.gov.uk

सोशल ऐक्सक्लूयन यूनिट की रिपोर्ट या अच्छे कामों के बारे में गाईड की कापियाँ लेने के लिए, इस वेबसाईट पर जाएं – www.socialexclusionunit.gov.uk, या नम्बर 020 7944 8133 पर फ़ोन करें।

Social Exclusion Unit
Office of the Deputy Prime Minister
7/G10 Floor
Eland House
Bressenden Place
London SW1E 5DU
टेलीफ़ोन – 020 7944 8133

बच्चों के ग्रीन पेपर की कापियाँ लेने के लिए नम्बर 0870 000 2288 पर फ़ोन करें।

डिपार्टमेंट फ़ॉर ऐजूकेशन ऐंड स्किल्ज़, www.dfes.gov.uk टेलीफ़ोन 0870 000 2288

ऐजूकेशन प्रोटेक्ट्स वेबसाईट – www.dfes.gov.uk/educationprotects

© क्राऊन कापीराईट 2003

प्रकाशन की तारीख़ सतंबर 2003